हम यहाँ पूज्य भावना भावैं। ताही कर भव सफल करावैं।
गावैं राग धार गुन भारा। सुनतें जीव लहै पुन सारा।।११।।

(दोहा)

खंड धातकी पछम दिस, अचल मेरु शुभ धाम।
ता संबंध तीरथ सबै, जजौं जिनेश्वर ठाम।।१२।।

ॐ ह्रीं धातकीपश्चिमदिश्यचलमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो पूर्णार्घं नि०

(इति अचलमेरु पूजा समाप्त)

अथ चतुर्थ मन्दिरमेरु सम्बन्धि जिनालय पूजा

(मुणयणाणंद की चाल)

अर्घ यह कर धरा पूर्व दिसा जानिए।
मेर चौथा भला मंदर सुख मानिए।
ता सम्बन्धी जिते जिन थानका हैं सही।
सो सकल थापि इहाँ जजौं पुन्य की मही।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक

(भुजंगप्रयात छन्द)

लयौ नीर प्राशुक भले पात्र माहीं।
धरी भक्त उर में लिए हाथ ठाहीं।
करूँ वीनती गुनन की गाय माला।
जजौं मेरु मन्दिर सम्वन्धि जिनाला॥१॥

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भला अगर चन्दन घसा नीर माहीं।
धरे गंध बहु भवर गुंजार लाहीं।
लया पात्र माहीं कही भक्त माला।
जजौं मेरु मन्दिर सम्वन्धि जिनाला॥२॥

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति०

भले खंडबिन तंदुला सोध लाया।
घने उज्वला सोभदाई सुहाया।
धरें पात्र माहीं पढ़ी भक्त माला।
जजौं मेरु मन्दिर सम्वन्धि जिनाला॥३॥

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् निर्वपामीति०

लए फूल शुभ वृक्ष के गंध दाई।
करी माल नीकी भली जुक्त लाई।
धरी आपने हाथ कह भक्त माला।
जजौं मेरु मन्दिर सम्बन्धि जिनाला॥४।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति०

नैवेद नाना भरे स्वाद लाया।
घने मेलि रस मोदकादिक बनाया।
धरे पात्र कर ले पढ़ी भक्त माला।
जजौं मेरु मन्दिर सम्वन्धि जिनाला॥५॥

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति०

लए दीप मणमय महाँ जोति धारी।
गया अन्ध तिनतें जगे छोड़ि सारी।
लए आरती गाय मुख भक्त माला।
जजौं मेरु मन्दिर सम्बन्धि जिनाला।।६।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति०

करी धूप दशधा लगी गंध आनी।
घसी नीरतें जोर बारीक ठानी।
धरी अगनि पै हरष कह भक्त माला।
जजौं मेरु मन्दिर सम्बन्धि जिनाला।।७।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लए श्रीफला लौंग बादाम भारी।
भले खारका और जानौं सुपारी।
चले पात्र में धार पढ़ भक्त माला।
जजौं मेरु मन्दिर सम्बन्धि जिनाला।।८।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति०

धरैं नीर चन्दन अक्षत पहुप भारी।
नईवेद दीपक भला धूप थारी।
धरी अर्घ कर ले भली भक्त माला।
जजौं मेरु मन्दिर सम्बन्धि जिनाला।।९।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्योऽनर्घपदप्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ

(मुणयणाणंद की चाल)

मेरु मन्दिर तनी भौम में जानिए।
महा बन भद्रसाला सुखद मानिए।।

तास मध्य चार जिन थान पुन्य की मही।
सो जजौं अर्घतें वीनती मुख कही।।१।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरो: भद्रसालवनसम्बन्धिचतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊपरैं मेर मन्दिर तनों जानिए।
नंदन बन सोभिये महा सुख मानिए।।
ता विषैं चार जिनराज मन्दिर सही।
सो जजौं अर्घ सों वीनती मुख कही।।२।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरो: नंदनवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु मन्दिर तने ऊपरें सार जी।
सौमवन है सही सकल सुखकार जी।।
ता विषैं चार जिनदेव मन्दिर सही।
सो जजौं अर्घ सों वीनती मुख कही।।३।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरो: सौमनसवनसम्बन्धिचतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊपरैं मेरु मन्दिर तने जानिए।
पांडुवन सोहनो तीर्थ सो मानिए।।
चार जिन थान विन किए तहाँ हैं सही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही।।४।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरो: पांडुकवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु मन्दिर दक्षिण दिसा जोय जी।
वृक्ष जम्बू कहौ रतनमय सोय जी।।
तास ऊपर कहौ थान जिनको सही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही।।५।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरो: दक्षिणदिशि जम्बूवृक्षोपर्येकजिनचैत्यालयायार्घं निर्वपामीति०

मेरु मन्दिर तनी दिसा उत्तर गिनौ।
सालमल वृक्ष सो मण मई धुनि भनौं।।

एक जिन गेह बिन कियो तहाँ है सही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही।।६।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरोरुत्तरदिशि शाल्मलिवृक्षोपर्येकजिनचैत्यालयायार्घं नि०

मेरु मन्दिर तनें चार गजदंत जी।
तिन विषैं चार जिन थान अघ तंत जी।।
देव खग जाय जिन सेव करहैं सही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही।।७।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरोश्चतुर्गजदंतेषु चतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं नि०

मेरु मन्दिर तनें दक्षिन दिश भौम जी।
तीन गिर कुलाचल जान अति सोम जी।।
तिन विषैं तीन जिन थान शुभ की मही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही।।८।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरोः दक्षिणदिशि त्रिषु कुलाचलेषु त्रिभ्यः जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं नि०

उत्तर दिश मेरु मन्दिर तनी जानिए।
तीन परवत भले कुलाचल मानिए।।
तिन विषैं तीन ही थान जिनके सही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही।।९।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरोरुत्तरदिशि त्रिषु कुलाचलेषु त्रिभ्यःजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं नि०

मेरु पूरब दिसा मन्दिर की जानिए।
आठ वक्ष्यार गिर बड़े शुभ मानिए।।
तिन विषैं आठ ही जिन भवन हैं सही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही।।१०।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरोः पूर्वदिशासंबंध्यष्टवक्षारगिरिष्वष्टाभ्यः जिनालयेभ्योऽर्घं नि०

पच्छिम दिस मेरु मन्दिर तनी जोइए।
आठ वक्षार गिर कनकमय सोइए।।

तिन विषैं आठ जिन थान शुभ की मही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही।।११।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरो: पश्चिमदिशासम्बध्यष्टवक्षारगिरिष्वष्टाभ्य: जिनालयेभ्योऽर्घं नि०

पूरब दिश मेरु मन्दिर तनी सार जी।
जान विजयारधा षोडशा भार जी।।
ऊपरै जिन भवन सबन के हैं सही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही।।१२।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरो: पूर्वदिशासम्बन्धिषोडशविजयार्धेषु षोडषजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं नि०

दच्छन दिश मेरु मन्दिर तनी जाय जी।
एक रूपाचल खगन को थाय जी।।
ता विषै एक जिनराज मन्दिर सही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही।।१३।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरो: दक्षिणदिशासंबंध्येकविजयार्धगिरावेकजिनालयायार्घं नि०

मेरु मन्दिर तनी पछिम दिशा भाय है।
षोडशा खगाचल रूपमय पाय है।।
तिन धरै देव भवन षोडश सही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही।।१४।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरो: पश्चिमदिशासम्बन्धिषोडशविजयार्धेषु षोडशजिनालयेभ्योऽर्घं नि०

मन्दिर शुभ मेरु की उत्तर दिशा जाय जी।
खगाचल एक गिर रूपमय थाय जी।।
ता विषैं एक जिनराज थल है सही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही।।१५।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरोरुत्तरदिशासंबंध्येकविजयार्धोपर्येकजिनालयायार्घं नि०

आदि इन मेर मन्दिर तनी लार जी।
थान बहु सुभग सब अकिरतम सार जी।।

तिन विषैं अकिरतम ठाम जिन जे सही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही।।१६।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला

(दोहा)

मन्दिर मेरु सु सोहनो, चवथो अचल अनादि।
ता सम्बन्धि जिन थान को, नमौं करों अघ वादि।।१।।

(परमादी की चाल)

पौहकर अर्घ मँझार पूरव मेरु कहा जी।
मन्दिर ताका नाम जिन धुनि माहि चया जी।।२।।

जाके शीश मँझार पांडुक बन नीका।
रचना धरैं अपार सुखदायक सब जीका।।३।।

ता बन चार अनूप शिला कही जी।
अर्धचन्द्र आकार बहु विस्तार लही जी।।४।।

मोटी जोजन आठ लंबी सौ लक्ष भाई।
चौड़ी है जो पचास जोजन अति सुखदाई।।५।।

ता ऊपर सिंघपीठ तीन कहे अति भारी।
ता मध कलश हजार आठ रहे शुभकारी।।६।।

मंगल द्रव वसु जान धूप घटादिक सारे।
रचना और अनेक जानि अनादि अपारे।।७।।

ऐसी शिला अनूप ता ऊपर जिन आवैं।
बैठी सिंहासन ठाम प्रभु असनान करावैं।।८।।

इस खंड जे जिन होंय तिनकों इन्द्र सु लावैं।
ह्याँ धर सुर सब आय क्षीरोदधि जल भावैं।।९।।

कलश सहस वसु आनि सागर से विस्तारा।
वसु जोजन त्वंग जानि एते मध्य विचारा॥१०॥

इक जोजन मुख सार ऐसे कलश सु लावैं।
हाथों हाथ सु देव हरि के हाथ धरावैं॥११॥

इन्द्र तबै कर लेय जय जय शब्द करावैं।
जिन शिर एकै साथ धारा कलश ढरावैं॥१२॥

कर हरि नृत्य थुति गान जिनकों घर पहुंचावैं।
तातैं ए गिरराज जग में तीरथ गावैं॥१३॥

तहँ मुनि चारण जाय ध्यान धरैं सुध लाई।
कर्म काटि शिव लेंय तातैं तीरथ थाई॥१४॥

इम बहु उपमा धार मन्दिर जानों मेरा।
कनकमई सब पीठ त्वंग बड़ा बहु फेरा॥१५॥

(दोहा)

चौथा मन्दिर मेरु जो, सुर खग को आधार।
हम ह्यां तैं पूजन तनी भावन भावैं सार॥१६॥

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

॥ *इति मन्दिरमेरु पूजा समाप्त*॥

अथ पंचम विन्द्युमालीमेरु पूजा

(गीता छन्द)

विद्युन्माली मेरु पंचम पच्छम पुष्कर दीप जी।
गजदन्त वृक्ष कुलाचला वैताढि पै शुभ टीप जी॥
इन आदि सकल वक्ष्यार थानक ऊपरैं जिन थान जी।
ते जजौं थापन थापि मैं ह्याँ भावना शुभ आन जी॥१॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धि जिनालयसमूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धि जिनालयसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धि जिनालयसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अथाष्टक

(त्रिभंगी छन्द)

जल प्राशुक लाया अति हरषाया निरमल पाया सुखकारी।
धर कंचन झारी भक्त उचारी नय शिव धारी गुन भारी॥
यह विद्युन्माली मेरु विशाली सब अघ टाली थान सही।
इनके सम्बन्धि जिन थल संधी मैं सब वंदौ पुन्य मही॥१॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

हम चंदन आनी गंध जु थानी घसि शुचि पानी त्यार किया।
धर रतनन झारी निज कर धारी भक्त उचारी हर्ष लिया। यह०॥२॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं नि०

शुभ अक्षत जानौं खंड न मानौ धवल अघानौ वास धरा।
तिनकों शुभ धोये पुंज संजोये भाव मिलोए पुण्य करा॥ यह०॥३॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्योऽक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् नि०

अब फूल सु लाये गंध धराये सब मन भाये शोभ दई।
कलवृक्षानि के हाथ लये हैं गूँथ दये हैं माल ठई॥
यह विद्युन्माली मेरु विशाली सब अघ टाली थान सही।
इनके सम्बन्धि जिन थल संधी मैं सब बन्दौ पुन्य मही॥४॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

नैवेद्य सु प्यारा बहु रस धारा स्वाद अपारा तुरत किए।
धर कंचन थाली भक्त विशाली कह गुन माली हरष हिए॥ यह० ॥५॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

मणि दीपक आन्या सब तम भान्या ज्ञान उगान्या हम लाए।
धर पातर माही उर हरषाही भक्त बड़ाई गुन गाए॥ यह० ॥६॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि०

हम धूप बनाए शुभ गंध लाए दश विध भाए मेलि लई।
अब भक्त बड़ाई मुख थुति गाई अगनि धराई खेय दई॥ यह० ॥७॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मन्धनदहनाय धूपं नि०

फल लौंग सुपारी श्रीफल भारी खारिक सारी हम लाए।
फिर जान बदामा और सुकामा लेकर ठामा शुभ दाए॥ यह० ॥८॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

जल चंदन आन्या अक्षत मिलाना पहुप सुजाना गंध धरा।
चरु दीप सु धूपा फल जु अनूपा अर्घ सरूपा हाथ करा॥ यह० ॥९॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्योऽनर्घपदप्राप्तयेऽर्घं नि०

अथ प्रत्येक अर्घ

(चौपाई)

पहुकर अर्ध पछम दिस मेर। विद्युन्माली नाम अति घेर।
ताके भद्रसाल जिन थान। सो हौं जजौं अरघ थुति आन॥१॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्य चतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं नि०

याही विद्युन्माली मेर। ता ऊपरि नंदन वन हेर।
ता वन में चव जिनके थान। सो हौं जजौं अरघ थुति आन।।२।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिनंदनवनस्य चतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं नि०

इसही मेरु सोमवन सोय। ताकी महिमा अद्भुत होय।
ता वन विषैं चार जिन थान। सो हौं जजौं अरघ थुति आन।।३।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरोः सौमनसवनसम्बन्धिचतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं नि०

मेरु सुविद्युन्माली देख। तिस पै पांडुक वन है एक।
ताके मध चव जिनके थान। सो हौं जजौं अरघ थुति आन।।४।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिपांडुकवनस्य चतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं नि०

विद्युन्माली मेर सुभाय। ताके चव गजदन्ते पाय।
तिन इक इक पै है जिनथान। सो हौं जजौं अरघ थुति आन।।५।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिचतुर्गजदंतेषु चतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं नि०

यही मेर दक्षिण दिस जोय। जम्बू नाम वृक्ष इक होय।
ताके मध्य एक जिन थान। सो हौं जजौं अरघ थुति आन।।६।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिदक्षिणदिशि जम्बूवृक्षोपर्येकजिनचैत्यालयायाऽर्घं नि०

इसही मेर उत्तर दिस जोय। सालमली वृछ जानो सोय।
ता ऊपर जिनको इक थान। सो हौं जजौं अरघ थुति आन।।७।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बध्युत्तरदिशि शाल्मलिवृक्षोपर्येकजिनालयायार्घं नि०

याही मेर दक्षिण दिस जाय। तीन कुलाचल गिर सुभ पाय।
तिनपै तीन थान जिनराय। सो हौं जजौं अरघ थुति गाय।।८।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिदक्षिणदिशायां त्रिषु कुलाचलेषु त्रिजिनालयेभ्योऽर्घं०

उत्तर दिस इस मेरु सु जेय। तीन कुलाचल परवत तेय।
तिनपै तीन देव जिनथान। सो हौं जजौं अरघ थुति आन।।९।।

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि विद्युन्मालिमेरोः त्रिकुलाचलेषु त्रिजिनालयेभ्योऽर्घं नि०

यही मेर पूरब दिश सोय। आठ वछार नाम गिर होय।
तिन सबपै इक इक जिन थान। सो हौं जजौं अरघ थुति आन।।१०।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरोः पूर्वदिशायामष्टवक्षारपर्वतेष्वष्टजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं०

यही मेर की पश्चिम सोय। आठ वछार नाम गिर होय।
तिनपै आठ जिनेश्वर थान। सो हौं जजौं अरघ थुति आन।।११।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिपश्चिमदिशायामष्टवक्ष्यारेष्वष्टचैत्यालयेभ्योऽर्घं नि०

पूरब इस ही मेर बताय। षोडश रूपाचल मन लाय।
तिन इक इक पै है जिनथान। सो हौं जजौं अर्घ थुति आन।।१२।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरोः पूर्वदिशि षोडशविजयार्धपर्वतेषु षोडशजिनालयेभ्योऽर्घं०

इसही मेर दच्छिन दिस जोय। विजयारध इक पर्वत सोय।
ता ऊपर है इक जिनथान। सो हौं जजौं अर्घ थुति आन।।१३।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरोः दक्षिणदिश्येकविजयार्धपर्वतोपर्येकजिनालयायाऽर्घं नि०

यही मेर पच्छिम दिश धरा। षोडश गिर वेताढ सु परा।
तिन सबपै जिनजी के थान। सो हौं जजौं अर्घ थुति आन।।१४।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरोः पश्चिमदिशायां षोडशविजयार्धपर्वतेषु षोडश-जिनालयेभ्योऽर्घं नि०

उत्तर इसही मेर सुजाय। एक रूप गिर परवत पाय।
जाके शीश एक जिनथान। सो हौं जजौं अर्घ थुति आन।।१५।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरोत्तरदिश्येकविजयार्धपर्वतोपर्येकजिनालयायाऽर्घं नि०

अर्ध दीप पहुकर के माहिं। दच्छिन इक्ष्वाकार कहाहिं।
ता ऊपर इक जिनवर थान। सो हौं जजौं अर्घ थुति आन।।१६।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरोः पुष्करार्द्धदक्षिणदिश्येकेक्ष्वाकारोपर्येकजिनचैत्यालयायार्घं०

याही दीप उत्तर दिश जाय। इक्ष्वाकार महा गिर पाय।
तापै इक है जिनको थान। सो हौं जजौं अर्घ थुति आन।।१७।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपोत्तरदिश्येकइक्ष्वाकारपर्वतसम्बन्धिजिनचैत्यालयायार्घं नि०

विद्युन्माली मेर सुलार। एते थान जान सुखकार।
जो तीरथ हैं जिनके थान। सो हौं जजौं अर्घ थुति आन।।१८।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला

(दोहा)

पच्छिम पहुकर द्वीप में विद्युन्माली मेर।
कनकमई अति सोहनौ तीरथ निरमल घेर।।१।।

(वेसरी छन्द)

विद्युन्माली मेर सुथाना। तहाँ जिन गेह पापमल हाना।
तिनकी उपमा को मुख गावै। सहस जीभ तें पार न पावै।।२।।

रतनबिम्ब कंचन जिन गेहा। देखत जन मन उपजे नेहा।
उदै पुन्य ताके तहाँ जावै। तुछ पुन धारी दरश न पावै।।३।।

जाय देव खग इन्द्र धनिंदा। तिननें पूरब भव जिन बंदा।
हमसे हीनसक्त नहीं जावैं। तातैं हम यहाँ भावन भावैं।।४।।

शची सहित हरि देव मिलाई। जाय मेर पूजै जिन पाई।
गावैं गान भक्त मुख सेती। नटै नाच नाना गति जेती।।५।।

शची नचै हर ताल बजावै। कभू नचैं हर शची नचावै।
हाव भाव सब लीला ठानै। चंचल पग कर तन द्रिग तानै।।६।।

नचै अकाश भुमक भू जाई। कभूं दीखे कभूं अदृश थाई।
दीरघ तन कबहूँ लघु होई। बजै ताल बैना धुन सोई।।७।।

बजैं तार तंदूरे भाई। बजैं मृदंग नफीरी आई।
सारंगी संहतार अपारा। बाजै बजें इत्यादिक सारा।।८।।

सबका सुर इकताल बजावैं, मीठे सुर बहु देवा गावैं।
हाथन की अंगुरी पै आवैं। अपसर बहुती निरत करावैं।।९।।

ऐसे देव हरी तब जावैं। ऐसे भक्ति करैं पुन्य लावैं।
जैजै शब्द करैं मुख सोई। ताकरि पाप मैल निज धोई॥१०॥

ऐसे तौर हर सुर तहाँ जावैं। वा खगराज भक्त वश आवैं।
सोभी बहुविध सेवा ठानै। भाव समान महा पुन्य आनैं॥११॥

या विध सुर खग कर नित सेवा। ऐसा मेर थान शुभ देवा।
विद्युन्माली मेर सुथाना। कवलों करों गुनन का गाना॥१२॥

तातैं जो भव पुन्य को चाहौ। तौ या मन्दिर को शिर नाहौ।
यह तीरथ शिव साधन ठामा। पुन्य बन्धन को है भव दामा॥१३॥

(दोहा)

विद्युन्माली सेवतें पाप नसे भय खाय।
जे भाव पूजे सों ते निहचै शिव जाय॥१४॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ *इति विद्युन्मालिमेरु पूजा समाप्त* ॥

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

मेरु सुदरशन जानिए, विजय अचल शुभ ठाम।
मन्दिर विद्युन्मालिया, पांचों यह शुभ धाम॥१॥

(मुणयणाणंद की चाल)

दीप जम्बू विषै मेरु सुदरशना।
लाख जोजन कहा त्वंग नभ फरसना॥
दूसरा धातकी खंड पूरब दिसा।
मेर विजय महा शोभ जुत अति लसा॥२॥

धातुकि खंड पश्चिम दिसा जानिए।
तीसरा मेरु शुभ अचल सुख मानिए॥
अर्ध पहुकर विषैं पूर्व दिस सार जी।
मेर मंदर कहा चतुरथा धार जी॥३॥

दिसा पच्छम तनी अर्ध पुहकर सही।
पांचमा मेर विद्युन्माली कही॥
चार यह मेर त्वंग सहस चौरासिया।
कनक के सकल यह तीर्थ अघनासिया॥४॥

एक इक मेर पै चार बन हैं सही।
एक बन मांहि जिन थान चवा धुन कही॥
चार बन तनै मिलि भए षोडश थला।
पांच मेरन तने चार बीसी फला॥५॥

मेर इक शैल गजदन्त चव जान जी।
पंच मेरन तनै बीस सुख थान जी॥
पंच ही मेर के वृक्ष दश थाय हैं।
सालिमल जम्बू वृक्ष नाम शुभदाय हैं॥६॥

मेर इक एक पट कुलाचल सार जी।
पंच के तीस बहु धरें विस्तार जी॥
जान बैताढ चौंतीस इक मेर के।
एक सत सतर पंच मेर शुभ घेर कैं॥७॥

जानि वक्ष्यार इक मेर के षोडसा।
पंच मेरन तने असी गिन मोडसा॥
इक्ष्वाकार दोइ धातकी खंड जी।
दोइ गिन अर्ध पहुकर धरा मंड जी॥८॥

सकल यह अकीरतम थान जानौं सही।
इन विषैं सबन पै थान जिन शुभ मही॥

पंच मेरन के सम्बन्ध सब गाइए।
तीन सत और चोरानवे पाइए॥९॥

जानेकों तौ सक्त हीन हम हैं सही।
भक्त वस भावना करत हैं इस मही॥
आठही द्रव्य शुध लेय थुत गाय जी।
जजतहों सकल जिनगेह हरषाय जी॥१०॥

प्रोष पूजा करी राग हिरदें धरी।
तासतें पुन्य की पोट उर में भरी॥
तास फल भाव अति निरमले हो गए।
करो तव पाठ यह सुफल मानों भए॥११॥

और सब जगत भ्रमजाल कवि जानियो।
एक जिन चरन को सरन सत मानियो॥
और नहीं आस यह चाहि जानों सही।
हाथ तें जजैं यह थान फिर शिवमही॥१२॥

(दोहा)

पंच मेर की आरती, और अकिरतम थान।
तिन पद टेक नमो सदा, जो चाहो सुध ज्ञान॥१३॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

(इति पंचमेरु विधान समाप्त)